

- 61 प्रततिर्व्रततिर्लता ॥ १११७ ॥
- 62 व-
- 63 ह्यस्यां तु प्रतानिन्यां गुल्मिन्युलपवीरुधः ।
- 64 स्यात्प्ररोहो ऽङ्कुरो ऽङ्कुरो रोहश्च
- 65 स तु पर्वणः ॥ १११८ ॥
- 66 समुत्थितः स्याद्वलिशं
- 67 शिखाशाखालताः समाः ।
- 68 साला शाला स्कन्धशाखा
- 69 स्कन्धः प्रकाण्डमस्तके ॥ १११९ ॥
- 70 मूलाच्याखावधिर्गण्डः प्रकाण्डो
- 71 ऽथ तटा शिफा ।
- 72 प्रकाण्डरहिते स्तम्बो विटपो गुल्म इत्यपि ॥ ११२० ॥
- 73 शिरोनामाग्रं शिखरं
- 74 मूलं बुध्नां ऽहिनाम च ।
- 75 सारो मज्जि
- 76 त्वचि च्छ्वा चोचं वल्कं च वल्कलम् ॥ ११२१ ॥
- 77 स्थाणौ तु ध्रुवकः शङ्कुः

61. 62. Kriechende Pflanze, Schlingpflanze (4 W.). — 63. Eine sich weithin ausdehnende kriech. Pfl. oder Schlingpfl. (4 W.). — 64. Sprosse, Auge (4 W.). — 65. 66. Eine aus dem Gelenk hervorkommende Sprosse. — 67. Zweig (3 W.). — 68. Ast (3 W.). — 69. Der Theil des Stammes, wo die Aeste beginnen. — 70. Der Stamm eines Baumes von der Wurzel bis zu den Aesten. — 71. Faserige Wurzel (2 W.). — 72. Strauch, ein Gewächs ohne Stamm (3 W.). — 73. Gipfel (3 W.). — 74. Wurzel (3 W.). — 75. Mark (2 W.). — 76. Rinde (5 W.). — 77. Der Stamm eines Baumes, von dem die Aeste abgehauen worden sind (3 W.).